रामविलास शर्मा

प्रखर रचनाधर्मिता कवि, जीवनीकार, आत्मकथाकार, आलोचक, समीक्षक, चिंतक, भाषाविद, समाजशास्त्री, दार्शनिक, जैसी बहुआयामी भूमिकाओं में हिंदी रचनाशीलता को नये आयाम देने वाले डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्तूबर, 1912 को उन्नाव जिले के उंचगांव सानी में हुआ था | वे लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पी.एच.डी. करने के बाद में प्रवक्ता बने | वर्ष 1937 में वे आगरा के कॉलेज में अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष बने | वर्ष 1976 के बाद वे आगरा से दिल्ली आ गए |

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद डॉ. रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित हैं, जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं | उन्होंने इतिहास को तोड़-मोड़ कर प्रस्तुत की गई ऐसी अनेक व्याख्याओं को खारिज करते हुए उनका प्रबल विरोध किया | उन्होंने पूर्वाग्रह से मुक्त नए सिरे से इतिहास लेखन पर बल दिया, जिसके आधार पर आधुनिक भारत का निर्माण हो सके | उनके आगे कोई लोभ और प्रलोभन ठहर नहीं सकता था और सत्ता या राजनीति का कोई बड़े-से-बड़ा शक्तिशाली व्यक्ति भी जिन्हें झुका नहीं सकता था | इसके साथ ही उनमें ऐसी कोमलता और भावुकता भी थी कि जब वे निराला, केदार, नागार्जुन, शमशेर और नागर जैसे हिंदी के बड़े लेखकों की चर्चा करते थे तो उनके संपूर्ण व्यक्तित्व में कोमल आभा फैल जाती थी |

निराला आज बीसवीं सदी के हिंदी के बहुत बड़े कवि माने जाते हैं और प्रेमचंद सबसे बड़े कथाकार | इस सच को उजागर करने और प्रतिष्ठापित करने में रामविलास जी की आलोचकीय मेधा का महत्वपूर्ण हाथ है | भारतेंदु हरिश्चंद्र या महावीर प्रसाद द्विवेदी के युग को हिंदी साहित्य के इतिहास में पुनर्जागरण काल के रूप में स्थापित करने वाले आलोचकों में रामविलास का काम और नाम बहुत बड़ा है |

वर्ष 1929 में जब रामविलास शर्मा झांसी में थे और गांधी द्वारा स्वदेशी आंदोलन चलाया जा रहा था, उन्होंने स्कूल में अंग्रेजों का दिया हुआ मेडल फेंक दिया था और विलायती कपड़ों की होली में अपनी टोपी जला दी थी | झांसी में इंटरमीडिएट कक्षा के छात्र

थे तब उन्होंने अंग्रेजी राज के विरुद्ध "हम गोरे हैं" शीर्षक कविता लिखी थी | लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.ए. आनर्स करते समय अंग्रेजी और फ्रांसीसी काव्यधाराओं से प्रभावित होकर कुछ सॉनेट और गीत लिखे थे | जब वे नियमित रूप से कविताएं लिखने लगे तो उनकी अधिकांश कविताएं सुमित्रानंदन पंत के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'रूपाभ' में प्रकाशित होती थीं | उन्होंने उसी समय निरंजन और अगिया बैताल के उपनाम से राजनीतिक व्यंग्य कविताएं भी लिखीं |

डॉ. रामविलास शर्मा में एक भारतीय व्यक्ति का स्वाभिमान भरा हुआ था | उनके लिए कोई भी सिद्धांत राष्ट्र से बड़ा नहीं था | वे सच्चे साहित्यकार के विषय में लिखते हैं, 'लेखक सारथी होता है, जो लीक देखते हुए साहित्य की बागडोर संभाले उसे उचित मार्ग पर ले चलता है' | एक बातचीत में रामविलास जी ने कहा था, 'मैं नहीं चाहता कि लोग मेरे मरने के बाद मुझे याद करें | आदमी का क्या है, आदमी तो आता-जाता रहता है | आदमी को नहीं, उनके काम को याद करना चाहिए | मैं चाहूंगा कि मेरे बाद कोई मेरे काम को आगे बढ़ाए |'

डॉ. शर्मा एक समालोचक के रूप में प्रसिद्ध हुए | उन्होंने लगभग 100 पुस्तकें लिखीं | वे आरबीएस कॉलेज के अंग्रेजी विभाग एवं आगरा विश्वविद्यालय के कन्हैयालाल माणिकलाल हिंदी एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ के महत्वपूर्ण पदों पर रहकर सेवानिवृत हुए | 31 मई, 2000 को उनका स्वर्गवास दिल्ली में हो गया |

उनकी रचनाएं हैं -

बुद्ध वैराग्य तथा प्रारंभिक कविताएं, सदियों के सोये जाग उठे, रूप-तरंग, पाप के पुजारी, प्रेमचन्द और उनका युग, भारतेन्दु युग और हिंदी भाषा की विकास परम्परा, विराम चिह्न, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी आलोचना, मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य, निराला की साहित्य साधना, भारत में अंग्रेजी राज्य और मार्क्सवाद, भारतीय इतिहास की समस्याएं, मार्क्सवाद और पिछड़े हुए समाज, पश्चिम एशिया और वेद, लेनिन और भारत, भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, भाषा का विकास, भारतीय साहित्य और हिंदी जाति के साहित्य की अवधारणा, भारतीय भाषा परिवार और हिंदी, नयी कविता और अस्तित्ववाद, अपनी धरती अपने लोग, हिंदी जाति का इतिहास, हिंदी नवजागरण और यूरोप, परम्परा का मूल्यांकन, गांधी अम्बेडकर लोहिया, इतिहास की समस्याएं।